IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिहार में बाढ़ की समस्या एवं निदान

Kanchan

Research Scholar

University Department of Economics

Lalit Naryan Mithila University, Darbhanga

Abstract: **बाढ़ एक प्राकृतिक प्रक्रिया है और मनुष्य ज्यों-ज्यों इसको नियंत्रित करने का प्रयास करता रहा है इसकी प्रवृत्ति नियंत्रण से बाहर रहने की रही है। बाढ़ न केवल बिहार तथा भारत ही नहीं वरन् विश्व के कई देशों की यह एक विकट समस्या रही है। भारत के अतिरक्ति नेपालए चीनए पाकिस्तानए रूसए इटली आस्ट्रेलियाए यू.एस.ए.आदि अनेकानेक देश बाढ़ के शिकार होते रहे हैं। इकेफ के प्रतिवेदन के अनुसार ब्चीन की वैए यांगत्से तथा येलो नदी तथा पश्चिम-पूर्वी एशिया में फिलिपाइन्स की एग्नो तथा पैम्पंगा नदी से क्रमशः 62ण्5 करोड़ तथा 11 करोड़ रूपये की क्षति प्रतिवर्ष होती है। अमेरिका में गत कई शताब्दियों से बाढ़ नियंत्रण पर 2200 करोड़ डालर खर्च किया जा चुका है। चीन में अभी हाल में 2012 में जो बाढ़ आई थी उसने भी चीन में आपार क्षति पहुँचाई है। श्पिछले कुछ दशकों में अबतक की सबसे भीषण बाढ़ को देखते हुए दक्षिणी रूस से सेदनेकोलेम्सक जिले के अधिकरियों ने आपात् की घोषणा कर दी है। कोलाइमा नदी में आयी इस बाढ़ में आधा रोदने वो लम्सक शहर डूब चुका है।**

Index Terms . बाढ़ए सामाजिकए संस्थाए जातिए प्राकृतिकए आपात्

परिचय

भारत में बिहार के अतिरिक्त पश्चिम बंगालए उड़ीत्ताए उत्तर नेपालए आसाम तथा जम्मू कश्मीरए पंजाबए आंध्रप्रदेश आदि राज्य भी बाढ़ से प्रभावित रही है। भारत में बिहार सर्वाधिक बाढ़ ग्रस्त राज्य रहा है। 1979 में किये गये एक अनुमान के अनुसार श्पूरे देश में बाढ़ से होनेवाली क्षतियों का लगभग 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत क्षति सिर्फ बिहार में होती है और इसमें भी सिर्फ उत्तर बिहार में होनेवाली क्षति का हिस्सा पूरे देश की क्षति का लगभग 30 प्रतिशत है। यह अनुमान तो 1979 का है। और आज की तिथि में क्षतियाँ पूर्व अनुमान से अधिक होगी क्योंकि नदियों की तलहटी। दिनोदिन बढ़ती ही आ रही है और मौसम के समय जल प्रवाह नदियों जल ग्रहण क्षमता से कई गुणा ज्यादा हो जाता है। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है और बाढ़ ने यहाँ की आर्थिक रीढ को कमजोर कर दिया है। यहाँ के लाखों एकड़ भूमि में लगे फसल बाढ़ में बर्बाद हो जाते हैं। हम जानते हैं कि समय पर पानी नदी पड़ने पर किसानों की आशाओं पर पानी पड़ जाता है क्योंकि उनकी हरी फसल घूप और गर्मी में जलने लगती है और बाढ़ के काल उनकी हंसती हुई फसल पानी पी-पी कर काल के काल में चली जाती है। यही नहीं बिहार के प्रत्येक बाढ़ में सार्वजनिक सम्पतियों मकानों आदि की अपार क्षतियों के अतिरिकत मनुष्यए पशु-पक्षी आदि की जान भी बाढ़ के विनाशकारी लीला में समाप्त हो जाती हैं।

बाढ़ को वश में करने की जितनी कोशिस की जा रही है तथा जितनी बड़ी राशि खर्च की जा रही हैए श्मर्ज बढ़ता ही जा रहा है और परिणाम वही ढाक के तीन पातश दीख रहा है। खुद सरकार ने चेतावनी दी है कि मौसम में हो रहे बदलाव के चलते 2035 तक सूखे और बाढ़ की घटनाओं में इजाफा होगा और मलेरिया संक्रमण भी कई रूपों में मानवीय आवादी को घेरेगा। बाद महाप्रलय का खंडरूप है। महाप्रलय काल संपूर्ण पृथ्वी जल में डूब जाती है। बाढ़ के समय पृथ्वी जल में आंशिक रूप से डूबती है। पृथ्वी का तीन भाग जल और

मात्र एक भाग थल है। श्बाढ़ एक द्य प्राकृतिक प्रक्रिया है। जब नदियाँ अपनी सीमाओं को तोड़कर अमर्यादित हो जाती है तो इसे हम बाढ़ कहते है।

ष्नदी तल में रेत के जमा होने के कारण नदी तल उँचा हो जाता है। और जल धारण करने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिये आस-पास के क्षेत्रों में बाढ़ आ जाती है। इसके अतिरिक्त नदी तल के उँचा हो जाने के कारण अपना मार्ग बदल देती हैए जिससे अनेक खतरे उपस्थित हो जाते हैं।ष्

श्उत्तर बिहार का संपूर्ण इलाका पश्चिमी चम्पारण से लेकर पूर्णिया तक सतही जल स्रोतो से भरा पड़ा है। नदियों में उनकी जल बहन क्षमता से अधिक प्रवाह आ जाने पर और उनके किनारे तोड़ कर बहने अथवा अतिवृद्धि के कारण समुचित जल निस्सरण न होने के कारण बाढ़ें आती हैं। बाढ़ एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसको समस्या के रूप में ग्रहण करने के पीछे मानवीय प्रवृतियाँ रही है। किसी कवि ने अपनी कविता में नदियों का वरदान तथा अभिशाप स्वरूप का वर्णन किया है।

बाढ़ प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थिति पर निर्भर

(क) पृथ्वी की प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थिति : .

बाढ़ बहुत कुछ क्षेत्रए राज्यए राष्ट्र या पृथ्वी की भौगोलिक एवं प्राकृतिक बनावट पर निर्भर करती है। इस पृथ्वी का कुल क्षेत्रफल 51072 मिलियन वर्ग किलोमिटर है। इसका प्रोत्रफल 148ण्04 मिलियन वर्ग किलोमीटर है। तथा जलीय मोतफल 361ण्132 मिलियन वर्ग किलोमीटर है। इस प्रकार पृथ्वी द्य का मुल लीग सीमायें 250472 कि.मी तथा तटीय रेखा 3560ण्00 मि.मी. है। विश्व में एथलीय देशों की संख्या ।। है जबकि तटीय देशों की संख्या 196 है। 2007.2008 की जनगणनानुसार विश्व की जनसंख्या 6514.8 मिलियन पृथ्वी पर वन क्षेत्र 30ण्3 प्रतिशत है जबकि कृषि योग्य भूमि 10ण्73 द्य प्रतिशत है। पृथ्वी प्रकृति का एक अनुपम उपहार है जिस पर पर्वत पठारए झोप-टापू झील-झरनाए छोटी-बड़ी नदियोंए सागर-महासागर देश-महादेश आदि स्थित है। इसी पृथ्वी पर मानव-दानव पशु-पक्षीए जीव-जन्तुए जंगल-झाड़ीए फल-फूल सहित सब अवस्थित हैं। मनुष्य सहित विविध प्राणियों एवं जीव-जन्तु का भोजनए जल आदि पृथ्वी पर उपलब्ध है। परन्तु बाढ़ के कारण सर्वत्र कोहराम मच जाता है। बाढ़ के साथ यह पृथ्वी कभी भूकम्पए कभी ज्वालामुखीए कभी आँधी-तूफान तथा सुनामी से भी त्रस्त रहती है।

प्रसिद्ध खगोल वैज्ञानिक वराहमिटिर (505 ई.) का मत है कि जिस तरह चुम्बक से घिरा हुआ लोहा आकाश में ही टिक जाता हैए उसी प्रकार पाँच महामूतों से बनी पृथ्वी आकाश में टिवी हुई है। लगभग साढ़े चार अरब वर्ष पूर्व पृथ्वी सूरज से अलग हुईए फिर धीरे-धीरे ढंड़ी हुई और जीवन पनया। पृथ्वी धरित्री या धरती कहलाई। यहाँ जीवन दायिनी ऑकसीजन के अलावा भोजन का सुरक्षा कवच है तो वहीं नाइट्रोजनए कर्बनडायआक्साइडए भीथेन आदि भी द्य

भारत की प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थिति :

बाढ़ के कारण जिन नदियों के लिये आज शोकए अभिशाप आदि का व्यवहार किया जाता हैए भारत में प्राचीन काल से अद्यतन नदियों की पूजा की जाती रही हैं। ये नदियों पृथ्वी पर प्राणियों का प्राण हैं। श्भौतिकी राष्ट्रों की माताएं नदियाँ है और पर्वत पिता। पिता निश्चेष्टए निर्बाध और चिंतामुक्त निर्झर पुरूष है। नदियाँ सचेष्टए गतिशवित्त मुक्तिदायिनी एवं रसपती सरस्वती है। शून्य में स्वच्छंद विवरण करने वाले मेघ जब क्षितिज की शय्या पर हलचल मचाकर रिक्त हो जाते हैं तब माता पृथ्वी उस तेजोदीप्त जीवन-पुण्य को अपनी सरित्तंतुओं के द्वारा धारण करती है। ये सरितायें ही पृथ्वी में प्रजनन की गति तथा शक्ति भरती है। माता पृथ्वी के शरीर में शिराओं का काम ये सरितायें ही करती है जिससे धरित्री पर जड़-जंगन की सृष्टि निरंतर उभरतीए चलती तथा मिटती रहती है। 10 मानव सभ्यता का विकास भी नदियों के किनारे ही हुआ। नदियों के किनारे गाँवोंए नगरोंए तीर्थों तथा महानगरों का निर्माण हुआ। कृषिए उघोगए आदि का विकास भी नदियों के किनारे हुआ। भारत में राजे-महाराजे का अधिकांश किलेए निवास एवं राजधानी भी नदियों के किनारे या नदियों से द्य घिरे होते रहे है। नेपाल एवं भारतवर्ष के अधिकांश तीर्थस्थल भी नदियों के तट द्य पर हैं। परन्तु यह विचारणीय प्रश्न है कि कल्याणकारिणी एवं प्राणदायिनी नदियों द्य की अमृत तुल्य स्वच्छ एवं पवित्र पानी को किसने प्रदुषित कियाः स्वच्छन्द विचरण करने वाली नदियों के जल को किसने रोकाः तटबंधों एवं उच्य राजमार्ग का निर्माण कर पानी निकलने और बहने के रास्ता को किसने रोकाः वनाच्छादित पर्वतमाला को खोदकर कल-कल बहने वाली नदी की जलधारा के साथ किसने छेड़छाड़ कियाः क्या स्वयं मानव ने ही बाढ़ को निमंत्रण दियाः ये सब विचारणीय प्रश्न है। पश्चिम राजस्थान में नदियों की संख्या कम है और इन नदियों में पानी का बहाव भी कम समय होता है।

हिमालय पर्वत से अनेक नदियाँ प्रवाहित होती हैए जिनमें प्रमुख है सिंधुए गंगाए ब्रह्मपुत्रए मेघना आदि। सिंधु नदी का उद्गम स्थान तिब्बत में मानसरोवर के निकट है। यह विश्व की बड़ी नदियों में एक है। यह भारत तथा पाकिस्तान से गुजरकर अरब सागर में मिलती है। द्य भारत में सिंधु की सहायक नदियाँ व्यास रावीए चेनाब ओर झोलम है। गंगा ब्रह्मपुत्र–मेघना की भगीरथी तथा अलकनंदा उप नदी घाटियाँ है। गंगा नदी उत्तराखंडए उत्तर प्रदेश बिहार तथा पश्चिम बंगाल से बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। गंगा की प्रमुख सहायक नदियों में यमुनाए रामगंगाए घाघराए गंडकए कोशीए महानंदा तथा सोन आदि है। चम्बल तथा बेतवा नदी यमुना में गंगा से पूर्व मिल जाती है। सुवान सिटीए जिया भरेलीए धनश्रीए पुथीमारीए पगलादीया और द्य मानस ब्रह्मपुत्र की भारत में सहायक नदियाँ है। मेघना की सहयाक नदियाँ में मक्कए त्रांगए गिरीए सोनाईए काटाखलए लंगरा चीनीए जटिंगा तुईवईए रूकनीए घलेखरी तथा मछुवा है। दक्कन क्षेत्र में प्रमुख नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है। कृष्णाए कोशी महानदी आदि अंतिम प्रमुख नदियाँ है। नर्मदा एवं ताप्ती पश्चिम की ओर बहने वाली प्रमुख नदियाँ है।

श्कुल भौगोलिक क्षेत्र 329 मिलियन हेक्टेयर में से लगभग 40 मिलियन हेक्टेयर बाढ़ प्रवण है। मार्च 2007 तक 1822 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र को तटबंधोए नहरों के निर्माणए नगर रक्षण कार्यो और प्लेटफार्मो की उँचाई बढ़ाने आदि द्वारा बाढ़ के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान की गई है।

बाढ़ के विनाशकारी रूप की चर्चा करते हुये बिहार में 2004 में आये भी बाढ़ के सम्बन्ध में बिहार इनसाइट ने कहाए श्बिहार की वार्षिक त्रासदी बाढ़ ने इस वर्ष भीषण तबाही का दस्तक दिया है। बाढ़ के प्रथम चरण में ही उत्तर बिहार के 20 जिले हफ्तों से पानी में डूबे है। घरए फसलए सड़कए रेलए पुलए सब कुछ बह गया है। जवानों को रोजी–रोटीए बूढ़ों का चैनए बच्चों की पढ़ाई–लिखाई और शासन–प्रशासन को सामान्य कार्य–कलाप बाधित है। अभी यह आकलन होना शेष है कि पानी ने कहाँ कितना कहर ढ़ायाः जन–जीवन को कितना अस्त–व्यस्त कियाः प्रकृति और नदियों को आक्रोश के कारण कितनी वेश–किमती जानें गयीए भूख और रोग के कारण कितने बेजुवान पशुओं की भाँति हुईः कितने असहाय माँ–बाप के सामने कितने बच्चे अकाल मरे और वह उपचार के अभाव में कितनी पत्नियाँए माँए पुत्री बहनों ने अपने पतिए बच्चों बाप और भाईयों को बिलखता छोड़ अकाल मृत्यु का शिकार हुयीः वर्षों की मेहनत से तिनका–तिनका जुटाये गये घर–गृहस्थी के साजो सामान बह जाने से कितने लोगों को कितने दिनों तक खानाबदोश की तरह विस्थापित होकर द्य रहना पड़ेगाः फसल और अनाज के बह जाने से विशाल परिवार को कितने द्य दिनों तक फाकाकशी करनी होगी और कर्ज के मकरजाल में कितना उलझाना पड़ेगाः और इस विनाश से अंततः बिहार की आबादी में गरीवी की तायदाद का कितना इजाफा होगा।

भारत की नदियाँ चार प्रकार की है– प्रथमए हिमालय की नदियाँय द्वितीयए प्रायद्वीपीय नदियाँय तृतीयए तटीय नदियाँ तथा चतुर्थ अन्तःस्थलीय नदियाँ। श्हिमालय की नदियाँ बारहमासी है जिनमे पानी आमतौर पर बर्फ पिघलनेए से मिलती हैं। इनमें वर्ष भर निर्बाध जल प्रवाह रहता है। मानसून के महीनों में हिमालय पर भारी वर्षा होती है जिससे नदियों में पानी बढ़ जाने के कारण अकसर बाढ़ आ जाती है ।

भारत श्उत्तर में हिमालय की आच्छादित चोटियों से लेकर दक्षिण के उष्ण कटिबंधीय सघन वनों तकए पूर्व में उपजाऊ ब्रह्मपुत्र घाटी से लेकर पश्चिम में थार के मरूस्थल तक 32ए87ए263 वर्ग कि0मी0 में फैला हुआ है। श्भारत विश्व का सातवाँ विशालतम देश है और जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा देश है। भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 1ण्21 अरब तथा बिहार की जनसंख्या 10ण्38 करोड़ हो चुकी है। भारतवर्ष के उत्तर में विशाल श्हिमालय पर्वतए पूर्व में बंगाल की खाड़ीए पश्चिम में अरब सागर से दक्षिण भारत का हिन्द महासागर मिलता है। इस प्रकार भारत के उत्तर में हिमालय तथा पूरबए दक्षिण तथा पश्चिम में समुद्र इसे शेष एशिया से अलग करता है। भारत की सीमा अनेक देशों से मिलती है। भारत के उत्तर में नेपालए चीन तथा भूटान है। पूर्व में म्यांमार और बंगलादेश है। म्यांमार की खाड़ी पाक जलमरूमध्य भारत को श्रीलंका से अलग करता है। भारत उत्तर से दक्षिण तक 3214 कि0मी0 और पूर्व से पश्चिम तक 2933 कि0मी0 है। इसकी भूमि सीमा लगभग 15ए200 कि0मी0 है। भारत की मुख्य भूमिए लक्ष्यदीप समूह तथा अंडमान निलोवार दीप समूह के समुद्र तट की कुल लम्बाई 7516ण्6 कि0मी0 है। भारत पूर्णतः उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। इसकी मुख्य भूमि 84श और 37°6श उत्तर अक्षांश तथा 68°7श और 97°25श पूर्वी देशान्तर के बीच फैली हुई है।

भारत की भूमि को चार भागों में बाँटा जा सकता है। विस्तृत पर्वतीय प्रदेशए गंगा–सिंधु का मैदानए रेगिस्तान क्षेत्र तथा दक्षिणी प्रायदीप । हिमालय की तीन ऋखलायें है। इनमें कश्मीरए जैसी कुछ उपंजाऊ तथा सौंदर्यपूर्ण घाटियाँ हैं। भारत का पर्वतीय दीवार 2400 कि.मी. की दूरी तक फैली द्य है और 240 से 320 कि.मी. चौड़ी हैं। सिंधु–गंगा का मैदान भी 2400 कि0मी0 लम्बे और 240 से 320 कि.मी. चौड़े है। रेगिस्तान दो प्रकार का है– विशाल रेगिस्तान तथा लघु रेगिस्तान।

बिहार की प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थिति :

बिहार राज्य भारत का सर्वाधिक बाढ़ ग्रस्त राज्य है। बाढ़ चूंकि बहुत कुछ क्षेत्र की प्राकृतिक एवं भौगोलिक बनावट पर निर्भर करता है। अतएव बिहार की प्राकृतिक एवं भौगोलिक बनावट की एक संक्षिप्त अध्ययन भी आवश्यक है।

भारत के पूर्वी क्षेत्र में होने के कारण बिहार को प्राचीन काल में प्राच्य अथवा पूर्वी प्रदेश के नाम से जाना जाता था। वर्तमान बिहार शरीफ का प्राचीन नाम ओदंतपुरी है। ओदंतपुरी के निकट ही बौद्ध बिहार है। बारहवीं शदाब्दी में यहाँ बौद्धों की संख्या अत्यधिक थी। इस कारण इसे बौद्ध बिहार कहा जाने लगा। बिहार का अर्थ होता है बौद्ध भिक्षुओं का आवास। विहार का अर्थ है- (1द्ध घूमना (जैसे वन-विहार) तथा (2द्ध रति क्रीड़ा स्थल। विहार का अर्थ है- (१) घूमनेवालाए ;2द्ध आनन्द लेने वालाए ;3द्ध कृष्ण ।

उत्तरी बिहार को वेद में ष्विदेहष् कहा जाता है और इसकी उतरी निटात राजधानी मिथिला थी। श्री मद्भागवत के अनुसार जब राजा मिथि के निमंत्रण को अस्वीकार कर वशिष्ठ इन्द्र को यज्ञ कराने स्वर्ग चले गये तो वहाँ से लौटने के बाद देखा कि राजा निमिए भृगए आदि ऋषियों की सहायता से यज्ञ सम्पन्न कर लिया है तो वशिष्ठ ने राजा निमि को शाप दे दिया जिससे राजा निमि मृत हो गये। ऋषियों ने राजा निमि के मृत शरीर को मथकर एक शिशु को उत्पन्न कर दिया। श्उस मंथन से जो शिशु उत्पन्न हुआ उसका नाम श्मिथिलश् अथवा विदेह रखा गया। उस बालक की संज्ञा श्जनकश् से भी हुई। मिथि के वंशजो ने पैतृक उपाधि विदेह के साथ ही जनक (पिता) भी कहलाया।

मिथिला के दक्षिण भाग में एक नया राज्य श्वैशालीश् नाम से उदय हुआ। वैदिक काल में अंग एवं मगध राज्य भी था। मगध की राजधानी राजगृह थी। पूरब में अंग राज्य की राजधानी चम्पा थी। मगध साम्राज्य के विस्तार के बाद इसकी राजधानी पाटलिपुत्र हुआ। चन्द्रग्रह के शासन काल में इसका विस्तार पश्चिम में अफगानिस्तानए पूरब में कामरूपए उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में पेनर नदी तक था। मगध काल में बिहार को प्रान्त की मान्यता मिली। ब्रिटीश शासक ने अप्रैल 1912 में बंगाल से बिहार तथा उड़ीसा को अलग किया गया। अप्रैल 1936 में उड़ीसा से बिहार को अलग किया गया। फिर 1956 में बिहार के कुछ भाग को बंगाल में मिला दिया गया। पुनः 1 नवम्बर 2000 ई. को बिहार को दो भागों में बाँटा गया- बिहार और झारखंड। इस प्रकार बिहार की भौगोलिक सीमाओं में समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है।

वर्तमान बिहार के उत्तर में नेपाल देश है। बिहार की उत्तरी सीमा नेपाल से मिलने के कारण यह. सीमा भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा हैं। बिहार के दक्षिण में झारखंड सज्यए पूरब में पश्चिम बंगाल सज्य एवं पश्चिम में उत्तर प्रदेश है। बिहार की आकृति लगभग आयताकार है। बिहार का विस्तार 24°20श्10ष से 27°31श 40ष उत्तरी अक्षांश तथा 83°19श्50ष से 88°17श 40ष पूर्वी देशान्तर के मध्य है।

बिहार राज्य की उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 302 कि.मी. तथा पूरब से पश्चिम 483 कि.मी. है। इस राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 94183 वर्ग कि.मी. है। बिहार का नगरीय क्षेत्रफल 1ए80ए4ण्60 वर्ग कि.मी. तथा ग्रामीण द्य क्षेत्रफल 92ण्358ण्40 वर्ग कि.मी. है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बिहार राज्य भारत का द्य 12 वाँ राज्य है और भारत के कुल क्षेत्रफल का यह लगभग 3प्रतिशत है। समुद्रतल से बिहार राज्य की औसत ऊँचाई 30 मीटर से 150 मीटर है। पूर्वी भाग 30 मीटर ऊँची है जबकि जहाँ-तहाँ 150 मीटर से अधिक ऊँचाई मिलती है। ष्उत्तर बिहार की भूमि स्वर्ग का श्वह खण्ड है जो हिमालय से पिघलकर पृथ्वी के रूप में परीणत हुई है। बिहार राज्य को प्राकृतिक दृष्टि से निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है-

1ण् उत्तर का शिवालिक श्रेणी एवं तराई प्रदेश 2ण् गंगा का विशाल मैदान।

;क) गंगा का उत्तरी मैदान (ख) गंगा का दक्षिणी मैदान (3द्ध दक्षिण का सीमान्तर पठारी प्रदेश ..

1ण् उत्तर का शिवालिक श्रेणी या तराई प्रदेश :- यह पश्चिमी चम्पारण के उत्तरी सीमा तटा शिवालिक श्रेणी का विस्तार हैं। यह क्षेत्र तीन भागों में बँटा हैण् रामनगर दून सुमेश्वर दून तथा दून घाटी। 214 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला हुआ छोटी-छोटी पहाड़ियों के क्रम को रामनगर दून कहते है। इन पहाड़ियों की अधिकतम ऊँचाई 240 मीटर है। सुमेश्वर श्रेणी पश्चिम में त्रिवेणी नहर के अगले भाग से लेकर मिरवना ठोरी तक लगभग 75 वर्ग किमी. में फैला है।

इनकी सर्वोच्च चोटी 874 मीटर है। इस क्षेत्र में कई दर्रे है जो नदियों के बहाब के कारण निर्मित हुए है। इन्हीं दरों से बिहार-नेपाल संपर्क स्थापित होमा है। दून घाटी लगभग 24 किलोमीटर लम्बी एवं गंगा के जलोढ़ मैदान से थोड़ा ऊपर है। रामनगर एवं सुमेश्वर श्रेणी के मध्य इस घाटी को हरहा नदी घाटी भी कहते हैं।

2ण **गंगा का विशाल मैदान** :- गंगा का विशाल मैदान वस्तुतः भारत का एक विशाल मैदान है। इसे हिंदुस्तान का मैदान भी कहा जाता है। बिहार राज्य को गंगा नदी दो भागों में बाँटती है। गंगा का उत्तरी मैदान तथा गंगा का दक्षिणी मैदान। दोनों मैदान समतल तथा नदियों द्वारा लायी गयी जलोढ़ मिट्टी से निर्मित है। यह गंगा का विशाल मैदान 90650 वर्ग कि.मी. में फैला है जो बिहार के क्षेत्रफल का 95 प्रतिशत है। इस क्षेत्र की उर्वरा शक्ति अत्यधिक है। इस क्षेत्र की औसत ऊँचाई समुद्रतल से 60 से 120 मी. के मध्य है। कहीं-कहीं इसकी औसत गहराई लगभग 1000 मीटर से 1500 मीटर के मध्य है। गंगा के इस विशाल मैदान को दो भागों में बाँटा जा सकता है-

(क) गंगा का उत्तरी मैदान तथा (ख) गंगा का दक्षिणी मैदान।

(क) गंगा का उत्तरी मैदान :- गंगा का उत्तरी मैदान समतल है। साथ ही यह क्षेत्र नदियों द्वारा परित्यक्त एवं विसर्पाकार गोखुर झील और चौर का भी जगह है। गंगा के उत्तरी भाग का मैदान घाघराए गंडकए बागमतीए बूढ़ी गंडक तथा कोशी नदियों के बहने का क्षेत्र है। नदियों ने इस प्रदेश को दोआबो में विभाजित कर दिया है। ये मुख्य दोआब है - घाघरा-गण्डक दोआबए गंडक-कोशी दोआब तथा कोशी-महानंदा दोआब ।

कोशी क्षेत्र गंडक का प्रवाह क्षेत्र तथा गंगा के बाढ़ग्रस्त में माट शिवना दिखती है। नदियों के बीच में बड़ा दियारा देश है। यह प्रदेश बाढ़ क्षेत्र की विशेष आकृति है। यह अपनी अलग पहचान प्रस्तुत करती है। इन नदियों की धाराओं से स्थापित चौर तथा छाड़न की भी अलग पहचान है। भिन्नता के कारण गंगा के उत्तरी मैदान को उप तराई क्षेत्र भांगर क्षेत्रए खादर क्षेत्रए चौर तथा मोइन में विभाजित किया जा सकता है। बिहार राज्य के सात जिलों में पश्चिम से पूरब तक संकीर्ण पट्टी के रूप में उप तराई प्रदेश या भांगर क्षेत्र है। लगभग 10 कि.मी. चौड़ी क्षेत्र में यहाँ कंकड़-बालू का मिश्रण पाया जाता है। बागड़ क्षेत्र जलोढ़ क्षेत्र है यहाँ 6.7 मीटर ऊँचा टीला भी दीख पड़ता है। खादर भूमि गंडक और कोशी के बीच है। यहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ से मिट्टियाँ उपजाऊ बनी रहती है। चौर या मोइन में वर्षा का जल जमा होता है। इस प्रकार मैदान का उत्तरी दिशा में दलदल भूमि की लम्बी श्रृंखलायें हैं। इस मैदान का दक्षिणी सीमा काफी ऊँचा है। गण्डकए बूढ़ी गंडकए महानंदा तथा कोशी आदि नदियों द्वारा मिट्टी लायी जाती हैं अतएव यह क्षेत्र जलोढ़ पंख का क्षेत्र है।

(ख) गंगा का दक्षिणी मैदान :- यह क्षेत्र पठारीय नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टियाँ के निक्षेपण से बना है। इस क्षेत्र में बहने वाली अधिकांश नदियाँ छोटी है। पुनपुनए फल्गूए किउल आदि नदियाँ समानान्तर प्रवाहित होकर पीनेट प्रवाह प्रणाली का निर्माण करती है। दक्षिण में कुछ जलमगन निम्न भूमि है। इसे टाल क्षेत्र कहते है। ष्टालष् शब्द ष्तालश् या श्तालाबष् शब्द का अपभ्रंश है। टाल में बाढ़ का पानी भर जाता है। इस क्षेत्र में भूमि का ढ़ाल उत्तर की ओर है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित है। गंगाए सोन दोआबए मगध का मैदान तथा अंग का मैदानए साथ ही दक्षिणी क्षेत्र में राजगीरए बराबर खड़गपुरए आदि पहाड़ियाँ तथा कैमुर का पठार भी है।

(ग) दक्षिण का सीमांत पठारी प्रदेश :- यह क्षेत्र मोट टाल थे मुंगेर तक विस्तारित है। इस क्षेत्र में तीव्र वाहित सरिताएँ हैंए समतल घाटियाँ हैं एवं विराम धरातल युक्त पठारी प्रदेश है। यह प्रदेश घोटानागपुर पठार का ही भाग है। जो खनिजों से युक्त है।

कुछ विद्वानों ने बिहार के भौगोलिक प्रदेश को 10 भागों में बाँटा है। तराई क्षेत्रए घाघरा-गंडक दोआबए गंडक-कोशी दोआवए कोशी महानंदा दोआबए गंगा दियारा क्षेत्रएए कैमुर पठार क्षेत्रए कर्मनाशा-सोन दोआबए सोन-किउल दोआबए पूर्वी-मध्य बिहार का मैदान तथा दक्षिण का अरवल क्षेत्र। तराई क्षेत्र उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर पूर्व का लगभग 10 कि.मी. चौड़ा क्षेत्र है। इस क्षेत्र में किशनगंज तथा अररिया जिला शामिल है। यहाँ 150 से.मी. वर्षा होती है। घाघरा गंडक दोआब हाजीपुर तथा गोरखपुर रेलमार्ग से जुड़ा है। इस क्षेत्र में प्रमुख रूप से सारण प्रमंडल है। यहाँ 120 से.मी. वर्षा होती है। गंडक कोशी दोआब में मुख्य रूप से पश्चिमी एवं पूर्वी चम्पारणए तिरहुतए दरभंगा तथा उत्तरी मुंगेर के जिले सम्मिलित है। यह क्षेत्र बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र है। कोशी-महानंदा दोआब मूलतः पूर्णिया प्रमण्डल में है। यहाँ भी बाढ़ का प्रकोप अधिक है। गंगाए दियारा क्षेत्र में वर्षा के समय यहाँ जलमग्न की स्थिति होती है। कैमुर पठार क्षेत्र रोहतास तथा कैमुर जिले में अवस्थित है। इसकी ऊँचाई 300.400 मीटर है। कर्मनाशा-सोन दोआब के क्षेत्र में कैमूरए बक्सर रोहतास तथा भोजपुर जिला है। यह सिंचित क्षेत्र है। सोन-किउल दोआब क्षेत्र में पटनाए जहानावादए औरंगावादए गयाए नालन्दाए नवादा तथा लक्खीसराय जिला सम्मिलत है। पूर्व-मध्य बिहार क्षेत्र में मुंगेरए भागलपुर तथा बाँका जिले आते हैं अरवल क्षेत्र में झाझा-जमुई रजौली तथा गया जिन आते हैं।

बिहार की जलवायु को हिमालय पर्वत दक्षिणावर्ती प्रायद्वीप ग्रीष्मकालीन तूफान दक्षिणी-पश्चिम मानसूनए कर्क रेखा तथा बंगाल की खाड़ी प्रमुख रूप से प्रभावित करता है यहाँ जादाए गर्मी तथा वर्षा-तीन प्रमुख ऋतु हैं। बिहार का उच्चतम तापमान 104 फारेनहाइट होता है। गाया सर्वाधिक भीषण गर्मी का स्थान हैं। बिहार में ग्रीष्म ऋतु मार्च से मध्य जून तकय वर्षा ऋतु म जून से मध्य अक्टूबर तक तथा शीत ऋतु नवम्बर से फरवरी तक है।

शोध-समस्या :

बाढ़ की समस्या से आजतक विहार को निदान नहीं मिला। इसका व्यवस्थित एवं समाधानमूलक विश्लेषण वर्तमान में अवस्थित कर तथा इसके स्वरूप को ध्यान में रखकर वास्तविक तथ्यों को प्रकाश में लाया जाय। इस सम्बन्ध में जो सरकारी प्रसास बाढ़ नियंत्रण के लिये किये गये हैं। वे क्यों नहीं अबतक सफल हुये हैंए इस पर भी विचार करते हुये उस बात पर भी गंभीरता से विचार करना है कि बाढ़ का आज बाढ़ का वरदान स्वरूप क्यों लुप्त हो गया और आज उसका स्वरूप अभिशाप बन कर क्यों रह गया हैद्द।

तदुपरान्त बाढ़ नियंत्रण के सरकारी प्रयासों की समीक्षा कर उनकी त्रुटियों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया जायेगा और बाढ़ समस्या के निदान के लिये एक मास्टर प्लान की आवश्यकता है ताकि बाढ़ का अभिशाप रूप लुप्त होकर वरदान स्वरूप में दिखाई पड़े। बाढ़ समस्या पर जो सुझाव दिये गये हैं उनमें समग्र विचार मूलक तथ्यों का अभाव है। इतना ही नहींए पत्र-पत्रिकाओं एवं सरकारी योजनाआ के अन्तर्गत जो सुझाव या विचार आये हैं वे भी पर्याप्त नहीं हैए क्योंकि उसमें बाढ़ समस्या पर निदान हेतु अल्पकालीन तथ्यों पर ही विचार किया गया है। इस समस्या के निदान हेतु दीर्घकालीन उपायों पर सरकारी तौर पर ठोस विचार नहीं किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य. :

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। जल प्रबंधन का कार्य यहाँ इस यप में करना होगा कि बाढ़ के पानी से कृषि कार्य भी सालों पर चलता रहे। इसके लिये नेपाल से बात कर एवं उस पर अपना प्रभाव डालकर नेपाल को भी भागीदारी बनाने की आवश्यकता दृढ़ इच्छा शक्ति से हैए क्योंकि कृषि क्षेत्र के लिये जल प्रबंधन के सही कार्य उपयोग पर सोचा जाय तो वैसी स्थिति में बाढ़ अभिशाप नहीं वरदान सिद्ध होगी। बाढ़ समस्या के समाधान के लिये मैं अल्पकालीन उपायों का विरोधी नहीं है परन्तु उसकी एक सीमा है। साथ ही नदियों की निदानुदिन जो स्थिति हो रही है बाढ़ नियंत्रण के लिये अल्पकालीन उपाय असफल हो रहे हैं।

विषय की महत्ता :

यदि संपूर्ण बिहार में बाढ़ का स्थायी निदान निकल जाता है तो बिहार के विकास में अधिक समय नहीं द्य लगेगा। अतएव मेरा मानना है कि बाढ़ समस्या का निदान यदि जल प्रबंधन के रूप में किया जाता है तो उत्तरी बिहार में चतुर्थिक खुखहाली छा जायेगी।

संदर्भ-सूची :

1ण कृषि अर्थशास्त्र - कलका प्रसाद भटनागरए अनन्त राम निगमए जगदीश प्रताद सिंह एवं जे. एन. निगमए पृ.-305

2ण किशोर प्रकाशन कानपुर-1ए षष्ठम संस्करणए 1977ण प्रभात खबरए मुजफ्फपुरए 22 मई 2012ए पृ.-13ण

3ण ैलउचवेपनउ वद सिववक चतवइसमउे वि छवतजी ठपींत दक त्मउकमपमेए 25जी छवअण 1979ए चंहम.1ण राष्ट्रीय सेवा योजना : सिद्धान्त एवं व्यवहार - लेखक प्रो. जीवनेश्वर सिंहए तिरहुत प्रेसए लहेरियासरायए प्रथम संस्करणए 1974ए पृ.-23.24ण

4ण प्रभात खबरए मुजफ्फपुर तिथि 22 मई 2012ए पृ.-13ण

5ण बिहार इनसाइट-1द्ध2004ए पृ.सं.-167

6ण प्रकाशक-सामाजिक शैक्षणिक विकास केन्द्रए कदमकुँआए पटनाए खण्ड-1ए संख्या-1ए अंक- मई से जुलाईए 2004ए ;बिहार के. बाढ़ पर प्रेस क्लिपिंग)

7ण कृषि अर्थशास्त्र - कालका प्रसाद भटनागरए अनन्त राम निगमए जगदीश प्रताद सिंह एवं जे.एन. निगमए प्रकाशक तेज बहादुर सिंह श्चन्देलश ण किशोर पब्लिकेशन हाउसए कानपुर-1ए षष्ठम संस्करणए 1977ए पृ.-305

8ण बिहार इनसाइट-1द्ध2004ए पृ.सं.-148ण

9ण हिन्दुस्तान दैनिकए 16 अप्रैल 2012ए पृ. 9ण

10ण बिहार की नदियाँ- श्री हवलदार त्रिपाठीए प्रकाशक-बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमीए पटनाए प्रथम संस्करणए प्रथम खंडए मई 1977ण पृ.सं.-5ण

11ण भारत–2010 ;वार्षिक संदर्भ ग्रंथ) 54 वाँ संस्करणए प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकारए पृ. 1061ण

12ण बिहार इनसाइट–1ध्2004ए पृ.सं.–167ए प्रकाशक–सामाजिक शैक्षणिक द्य

13ण विकास केन्द्रए ;एस.एस.बी.के.) ए पटना। भारत–2010ए 54 वाँ संस्करणए प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण